B.A. History; Part-I (Sub./Gen)
Paper: I, Unit: I(c); Date: 10·11·2020
Lecture No. 8

Lesson: प्रादेशिक राज्यों का उदय (जनपद और महाजनपद राज्य)

ऋग्वैदिक काल में प्रारम्भ आर्यों का प्रसार अभियान उत्तरवैदिक काल में तीव्र हुआ और वे सप्त सिन्धु तथा सरस्वती नदी घाटी से निकल मध्य गंगाघाटी में फैल गए और उन्होंने छोटे-बड़े अनेक जनपद (इलाकाई) और महाजनपद (प्रादेशिक) राज्यों का निर्माण किया। आर्यों के प्रसार और जनपद एवं महाजनपद राज्यों के निर्माण में सर्वाधिक प्रमुख भूमिका लोहा के प्रयोग की थी। अब लोहे के कुल्हाड़ों और फावड़ों से जंगलों की सफाई और भूमि को समतल बनाने का काम आसान हो गया। लोहे के फालों वाले हल से खेतों की जुताई सुगम हो गई। लोहे के पहिए वाले रथों से आवागमन सुविधाजनक हो गया। साथ ही लोहे से बने हथियारों ने आम जनों (कबीलों) और उनके प्रमुखों (राजन्) की शक्ति असाधारण ढंग से बढ़ा दी। परिणामतः कृषि का क्षेत्र विस्तार ही नहीं हुआ बल्कि खेती सघन भी हुई। कृषि तथा घरेलू जीवन से जुड़ी सामग्रियों का निर्माण कार्य बढ़ा जिससे शिल्प का विकास हुआ। कृषि अधिशेष से शिल्पियों का भरण-पोषण ही नहीं अपितु राजा और उसके अनुचरों एवं सैनिकों का पोषण भी संभव हुआ। इन परिवर्तनों को व्यवस्थित और विकास को नियमित करने के उद्देश्य से चतुर्वर्ण पर आधारित वर्ण व्यवस्था और विधियों का निरूपण किया गया, जिनके क्रियान्वयन एवं अवस्थापन के लिए राजा और राज्य की संस्था का उदय हुआ। छोटे राज्यों को जनपद और बड़े राज्यों को महाजनपद कहा गया जिनका संजाल 8वीं से 6ठी सदी ई० पू० के मध्य पूरे उत्तर भारत में फैल गया। बौद्ध स्रोतों से ज्ञात होता है कि गौतम बुद्ध के आविर्भाव से पूर्व भारत में सोलह महाजनपद और अनेक जनपद राज्य विद्यमान थे जिनमें अधिकांश राजतंत्रात्मक तथा उससे कम संख्या में गणतंत्रात्मक राज्य थे। कतिपय महाजनपदों की भौगोलिक अवस्थिति का उल्लेख समीचीन होगा।

1. अंग: आधुनिक भागलपुर में अंग महाजनपद राज्य था, जिसकी राजधानी चम्पानगर थी। चम्पानगर एक समृद्ध राजधानी थी, जिसके ध्वंसावशेष आज भी इसकी विशालता एवं समृद्धि के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। अंग राज्य का अपने पड़ोसी राज्यों से विरोध था। जब मगध साम्राज्यवाद का उदय हुआ, तो वहाँ के राजा बिम्बिसार ने अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया।

2. मगध: यह भारत का सबसे शक्तिशाली और प्रमुख राज्य था, जो प्रारंभ में वर्तमान पटना से लेकर गया जिला तक फैला हुआ था। मगध राज्य की राजधानी राजगृह थी। इस राज्य की स्थापना बृहद्रथ ने की थी। बिम्बिसार और अजातशत्रु ने मगध राज्य को साम्राज्य में बदल डाला और नन्द राजवंश के अधीन इसका चर्मोत्कर्ष हुआ। चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्द वंश का विनाश कर मगध साम्राज्य का विस्तार अखिल भारतीय बनाया।

3. विदेह: विदेह प्रदेश में राजतंत्रात्मक जनपद राज्य था जिसकी राजधानी मिथिला थी। विदेह जन के विदेघ माथव ने अपने पुरोहित गौतम रहूगण की सहायता से पश्चिम में गंडक, पूरब में कोसी तथा दक्षिण में गंगा नदी और उत्तर में हिमालय की तलहटी तक फैले विशाल मैदान में विदेह राज्य का निर्माण किया। जनक राजवंश की समाप्ति के बाद विदेह वज्जी संघ में शामिल हो गया, जिसे अजातशत्रु ने वैशाली के साथ मगध में मिला कर दिया।

4 काशी : काशी राज्य की राजधानी का नाम वाराणसी था। विभिन्न राजाओं के काल में उस जनपद राज्य का काफी विकास हुआ। इसका अपने पड़ोसी राज्य कोशल से झगड़ा चलता रहता था। अंग और विदेह की भांति काशी भी अन्ततः मगध साम्राज्य में मिला लिया गया।

5 कोशल : उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में कोशल राज्य था जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी। इसने पहले काशी को स्वायत्त किया और बाद में स्वयं काशी के साथ अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी मगधों के हाथों गवाँ बैठा।

5 वज्जी संघ : यह एक राज्य न होकर संघ राज्य था, जिसमें आठ जनपद राज्य थे। ये सभी आधुनिक तिरहुत प्रमंडल में फैले हुए थे। इसके संघटक राज्यों में लिच्छवियों की प्रधानता थी और यह एक गणराज्य था, जिसकी राजधानी वैशाली थी। मगध सम्राट अजातशत्रु ने इस वृहद गणराज्य का विध्वंस कर मगध साम्राज्य में मिला लिया।

6 मल्ल : वज्जी संघ की भांति मल्ल भी एक संघीय गणराज्य था। इसमें मल्लों के नौ राज्य शामिल थे। एक की राजधानी कुशीनगर और दूसरे की पावा थी। महाभारत में दोनों मल्लों राज्यों का उल्लेख मिलता है। यह वज्जी संघ के पश्चिम गोरखपुर के आसपास था।

7 चेदि : चेदि जनपद राज्य आधुनिक बुन्देलखण्ड में स्थित था, उसकी राजधानी शुक्तिमति थी।

8 वत्स : काशी के पश्चिम में वत्स महाजनपद था, जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। कौशाम्बी एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। पुराणों के अनुसार इक्ष्वाकु ने यमुना नदी के तट पर इसकी स्थापना की थी।

9 कुरु : दिल्ली और मेरठ के बीच कुरु राज्य था, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। इसी कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था।

10 पांचाल : मगध राज्य के बाद यह सबसे बड़ा राज्य था, जो सम्पूर्ण रुहेलखंड और गंगा-यमुना दोआब के दोनों में फैला हुआ था। उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र और दक्षिणी पांचाल की राजधानी काम्पिल्य थी। महाभारत के अनुसार द्रौपदी पांचाल राज्य की थी।

11 मत्स्य : यह जनपद राज्य कुरु के दक्षिण और यमुना नदी के पश्चिम में अवस्थित है। इसके राज्य की राजधानी का नाम विराटनगर थी।

12 सूरसेन : सूरसेन, मत्स्य राज्य के दक्षिण में अवस्थित था, जिसकी राजधानी मथुरा थी। यहाँ यदुवंशियों का राज्य था।

13 अस्मक : गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित अस्मक राज्य की राजधानी पोटली थी, जिसपर इक्ष्वाकु राजवंश के राजा शासन करते थे।

14 अवन्ति : आधुनिक मालवा प्रदेश में स्थित अवन्ति राज्य पांचाल की भांति दो भागों में विभाजित था। उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी और दक्षिणी अवन्ति की राजधानी माहिष्मती थी। इस राज्य पर हैहय राजवंश का शासन था।

15 गांधार : यह आधुनिक अफगानिस्तान के पूर्वी भाग में स्थित था, जिसका विस्तार पंजाब और कश्मीर तक विस्तृत था। गांधार राज्य की राजधानी तक्षशिला थी, जो एक शिक्षाकेन्द्र के रूप में विख्यात हुआ।

16 कम्बोज : कम्बोज गांधार का पड़ोसी राज्य था, जिसकी राजधानी राजपुर थी। बौद्ध साहित्य में गांधार तथा कम्बोज का उल्लेख एक साथ मिलता है।

इन सोलह महाजनपदों के अतिरिक्त अनेक छोटे-छोटे जनपद राज्य छठी सदी ई०पू० में फलते फूले। इनमें कपिलवस्तु के शाक्य, पिप्पलीवन के मोरिय, वैशाली के लिच्छवी, रामग्राम के कोलिय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि ई०पू० छठी सदी राजाओं के काल भारत के तट-तट क्षेत्रों में उपनिवेश, के परिणामस्वरूप अनेक जनपदीय और महाजनपदीय राज्यों का उदय हुआ।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर